मोरंगे

सितम्बर–अक्टूबर 2017

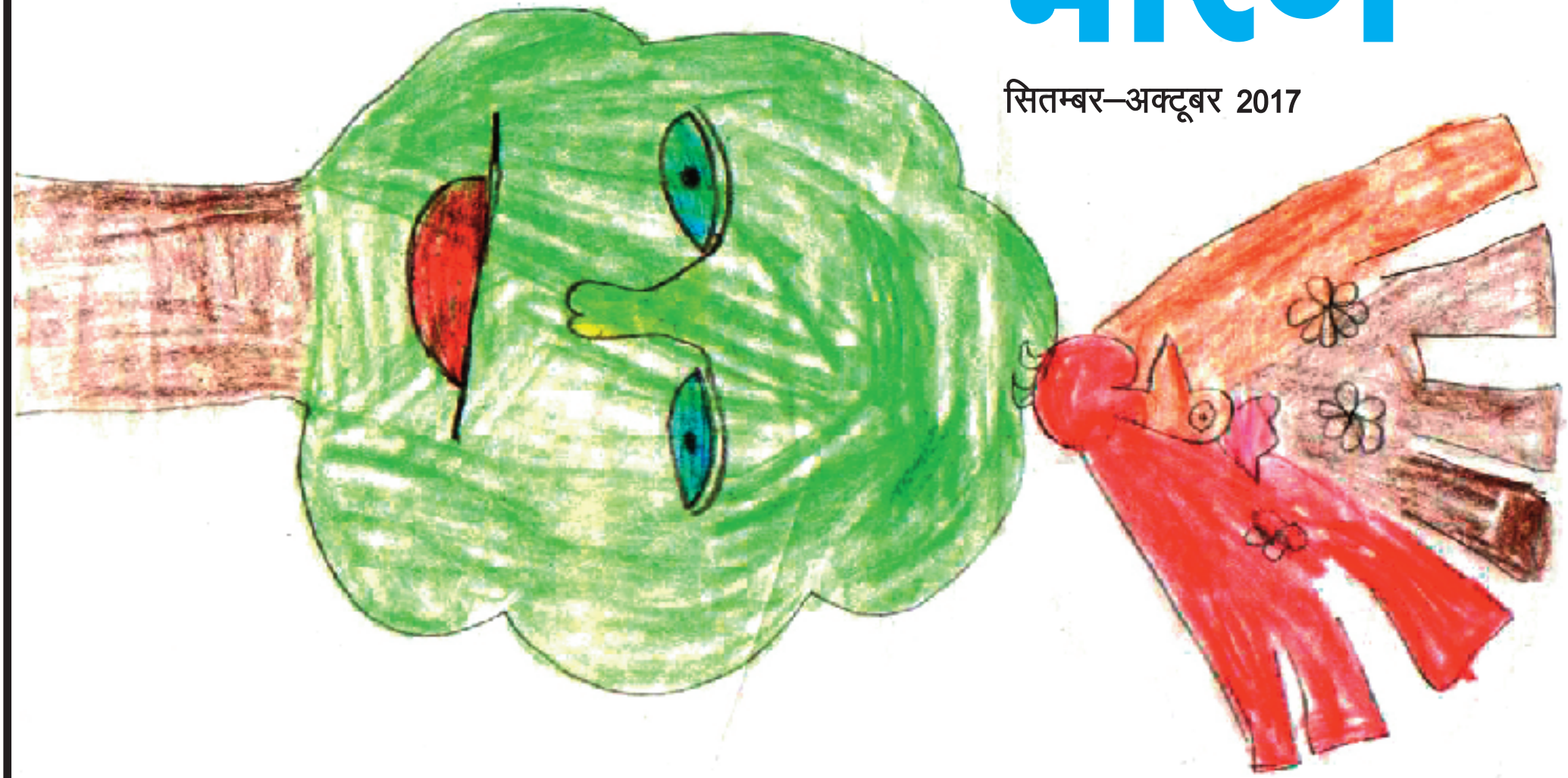

इस बार

खिड़की

3 एक था चूहा

कविताएँ

5 कलरव / सड़क

6 हाथी आया रे / बच्चे

7 पानी आया / डंकी मंकी

कहानियाँ

8 भेड़

9 खरगोश की समझदारी

10 खाऊँगा क्या

11 उपाय करो

12 नींद आ गई / जानवरों की सैर

13 सांप

याद की धूप–छाँव में

14 बाघ

बात लै चीत लै

15 संतान

16 छुर्रा जब रास्ता भूला

18 मटरगश्ती बड़ी सस्ती

19 हीहीही–ठीठीठी

कुछ हमने बढ़ायी

अंजली
उम्र–9 वर्ष, समूह–रौशनी

सम्पादन : विष्णु गोपाल
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : जीवनेद्र सिंह
वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल
आवरण पर चित्र – आरती सैनी, उम्र–9 वर्ष, समूह–रौशनी
वर्ष 8 अंक 87–88

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, विभा–अमेरिका, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, एच.टी. पारेख व W.C.T. के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
विजेन्द्र पाल
सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

एक था चूहा

एक दिन एक साधु अपने चिंतन में मग्न था। तभी अचानक उसे एक चूहा दिखाई दिया। एक कौआ, चूहे को झपटने की कोशिश कर रहा था। साधू ने उस छोटे चूहे को लालची कौए की चोंच से छुड़ाया। फिर वो चूहे को जंगल में स्थित अपनी कुटिया में ले गया। वहाँ साधु ने चूहे को खाने के लिए चावल के दाने दिए और पीने के लिए दूध दिया।

पर तभी एक लंबी मूछों वाली बिल्ली कुटिया में घुस आई। बिल्ली की पूँछ हवा में सीधी तनी थी। साधु पूजा–पाठ के साथ–साथ कुछ जादू–टोना भी जानता था।

प्रिया बैरवा, कक्षा–4, राजकीय स्कूल रामपुरा

उसे बिल्ली से अपने पालतू चूहे को कुछ खतरा महसूस हुआ। इसलिए उसने अपने पालतू चूहे को तुरंत एक शक्तिशाली बिल्ली में बदल दिया। परंतु उस पूरी रात एक कुत्ता जंगल में भौंकता रहा। कुत्ते के डर से साधू की बिल्ली दुबककर खाट के नीचे छिप गई। तभी साधु ने, बिना अधिक सोच–विचार किए अपनी बिल्ली को एक बड़े कुत्ते में बदल दिया। उसके कुछ देर बाद एक भूखा चीता जंगल में आया। कुत्ते को देखकर चीता उस पर तेजी से लपका। भाग्यवश साधु पास में ही था। साधु ने एक मंत्र पढ़ा जिससे उसका कुत्ता तुरंत एक ताकतवर और सुंदर चीते में बदल गया। उस चीते का घमंड देखने काबिल था! साधु का चीता पूरे दिन अपनी

लाली, उम्र–9 वर्ष, समूह–सागर

पूँछ हिलाता और जंगल में घूमता। वो जंगल के सारे जानवरों पर अपना रोब जमाता।

चीते का घमंड साधु को अच्छा नहीं लगा। उसने चीते को डांटते हुए कहा ''मेरे बिना सहयोग तो तुम जिंदा ही नहीं बचते और अगर जिंदा बचते भी तो भी सिर्फ एक छोटे से चूहे होते। इसलिए तुम्हारा यह फालतू का घमंड ठीक नहीं है।''

यह सुनकर चीता काफी अपमानित हुआ और उसे बहुत गुस्सा भी आया। बूढ़े साधु के परोपकार को वो पूरी तरह भूल गया। ''अगर किसी ने मुझसे यह कहने की जुर्रत की, कि मैं पहले चूहा था, तो मैं उसे मार डालूंगा!''

परंतु साधु समझदार था। वो चीते के मन की बात को भांप गया। ''तुम बड़े नमकहराम हो! अब जंगल में फिर से वापिस जाओ और दुबारा एक चूहे की जिंदगी जीयो!''

साधु के कहते ही वो सुंदर शक्तिशाली और घमंडी चीता एक डरपोक, निरीह छोटे से चूहे में बदल गया। वो चूहा दौड़कर जंगल में गया और उसके बाद कभी भी किसी को कहीं भी दिखाई नहीं दिया। उसके बाद साधु दुबारा फिर से अपने ध्यान और चिंतन में लीन हो गया।

मार्सिया ब्राउन

(अनुवाद– अरविन्द गुप्ता) भारत ज्ञान विज्ञान समिति से साभार

कलरव

सुबह–सवेरे चिड़िया जागती।
चहक–चहक कर शोर मचाती।
डाल–डाल से पेड़–पेड से।
राग छेड़कर हमें जगाती।
आसमान में झुंड बनाकर।
जंगल और पहाड़ों में जाती।
दिनभर खाती मौज उड़ाती।
सांझ हुए फिर घर को आती।
आते ही सब शोर मचाये।
दिनभर बीती बात बताएँ।
पंखों से बच्चों को ढककर।
सब सपनों में खो जाएँ।
नीरू गुर्जर, उम्र–9 वर्ष,
समूह–सागर

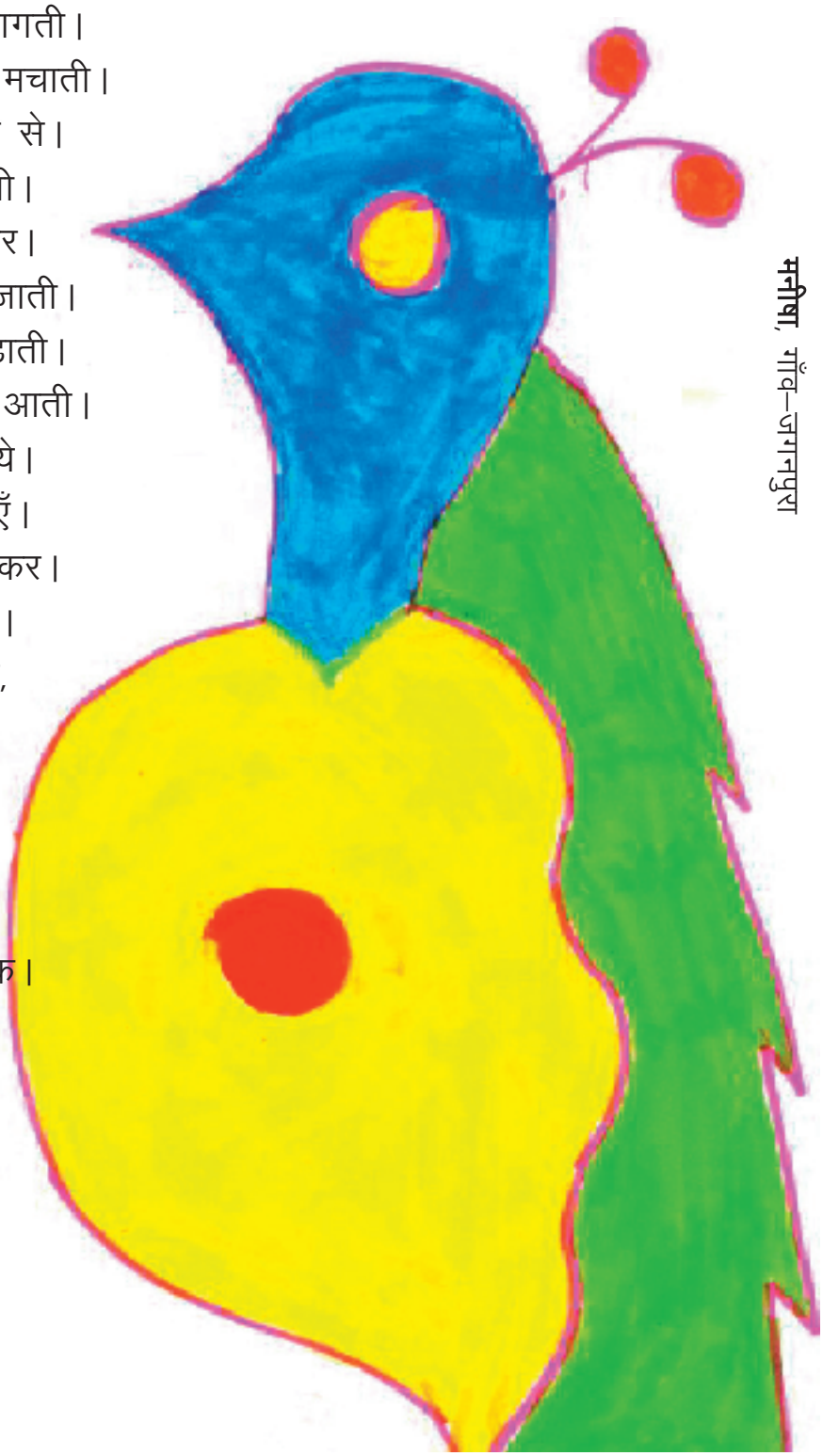

मनीषा, गाँव–जगनपुरा

सड़क

मैं हूँ एक सड़क।
वेन चलती धड़क–धड़क।
वेन में था बंदर।
बंदर गया पहाड़ पर।
पहाड़ पर था पेड़।
पेड़ पर थे पत्ते।
पत्तों में था तोता।
तोते ने खाया आम।
आम में था चींटा।
चींटें ने तोते को पीटा।
तोता उड़ा डाली से।
करी शिकायत माली से।
माली ने खिलाई बर्फी।
तोते को लग गई सर्दी।

प्रिया मीना, समूह–रोशनी, उम्र–9 वर्ष

महेन्द्र, उदय पाठशाला, जगनपुरा

बच्चे

दो छोटे बच्चे।
दौड़ रहे थे।
खेल रहे थे।
एक और आ गया।
अब हो गये वो तीन।
तीन छोटे बच्चे।
नाव चला रहे थे।
पानी उछाल रहे थे।
एक और आ गया।
अब हो गये चार।
चार छोटे बच्चे।
गा रहे थे गाना।
कर रहे थे नाच।
एक और आ गया।
अब हो गये पाँच।
पाँच छोटे बच्चे।
हो गई थी शाम।
जा रहे थे घर।

कुलदीप मीना, समूह–उजाला, उम्र–12 वर्ष

हाथी आया रे

हाथी आया रे...
पूंपाडे सी सूंड
खूंटे जैसे दांत
धम्मक दौड़ लगाता हाथी आया रे...
गन्ना चबा के
केले को खा के
सूंड हिलाता हाथी आया रे...
हो के सवार हम
हाथी पर बैठे
गाँव गाँव घूमे मजा आया रे...
सूंड उठाकर
पास बुलाए
घर–घर में जाकर मांगे रुपया रे..

विष्णु गोपाल

चन्द्रमुखी,
उम्र–7 वर्ष,
समूह–खुशबू

पानी आया

नदियों में बहता पानी आया।
ताल – तलैया भरता आया।
पेड़ों को भिगोता आया ।
पौधों को उगाता आया।
ऊपर चढ़ता पानी आया।
हेण्डपम्प में चढ़ता पानी आया।
पानी आया – पानी आया।
कुएँ में बढ़ता पानी आया।
हरी हरी घास उगाता आया।
पानी आया – पानी आया।

अशोक केवट,
उम्र–9 वर्ष, समूह–सागर

डंकी मंकी

डंकी, मंकी थे दो भाई।
शेर बड़ा था उनका भाई।
मम्मी उनकी हथनी रानी।
सारे दिन पीती वह पानी।
एक दिन डंकी हुआ बीमार।
भालू ने सुई लगाई चार।
डंकी हो गया ठीक ठाक।
खुषी में बांटी चॉकलेट आठ।
डंकी को मम्मी ने पुकारा।
शेर ने हंसी से ठहाका मारा।

सोनू मीना,
समूह–उजाला, उम्र–11 वर्ष

हिमांशु, उम्र–13 वर्ष, समूह–शीशम

कहानी

सुनीता सैनी, उम्र–9 वर्ष, समूह–रिमझिम

भेड़

एक बार की बात है। एक गड़रिया जंगल में भेड़ चराने गया। उसे एक हाथी दिखाई दिया। सारी भेड़ें उस हाथी से डरकर भागने लगी। गड़रिया अपनी भेड़ों को पकड़ने के लिए भागने लगा। उसने भाग–भाग कर सारी भेड़े पकड़ ली। उसने भेड़ों को गिना भी नहीं और उन्हें लेकर चला गया। एक भेड़ डरती–डरती शेर की गुफा में चली गई। जब शेर अपनी गुफा में आया तो उसने देखा कि उसकी गुफा में एक भेड़ है। मगर शेर का पेट भरा हुआ था। शेर ने उसे खाया नहीं और उसे जाने दिया। भेड़ बहुत डरी हुई थी इसलिए तुरंत गुफा में से चली गई। भेड़ रास्ता ढूंढती हुई सड़क पर आ गई और घर की तलाश में सड़क पर चलती रही। उसको चलते–चलते सुबह हो गई मगर उसे अपना घर दिखाई नहीं दिया। गड़रिये ने सुबह उठकर जब भेड़ों को गिना तो उनमें से एक भेड़ कम थी। वह भेड़ को ढूंढने चला गया। वह दूसरे रास्ते से चला गया और उसने अपनी भेड़ को खोजना शुरू किया। पर उसे कहीं पर भी अपनी भेड़ दिखाई नहीं दी। गड़रिये ने जंगल में भी उसे ढूँढा लेकिन भेड़ नहीं मिली। गड़रिया मायूस होकर घर चला आया। घर आकर उसने देखा तो भेड़ वहाँ आ चुकी थी। गडरिया अपनी भेड़ को देखकर बहुत खुश हुआ।

काजल, समूह–बरगद, रा.बा.उ.प्रा.वि. आवासन मण्डल

खरगोश की समझदारी

खुशी, उम्र–6 वर्ष, समूह–मुस्कान

एक बार की बात है। जंगल में एक बंदर लकड़ियाँ काट रहा था। तभी वहाँ से एक खरगोश निकला। खरगोश दूध की मलाई की एक मटकी लेकर जा रहा था। बन्दर ने कहा, ''खरगोश भाई, क्या तुम मुझे थोड़ी सी मलाई खिला सकते हो?'' खरगोश ने कहा, ''हाँ, क्यों नहीं?'' फिर खरगोश ने बंदर को थोड़ी मलाई खिला दी। बंदर को मलाई बहुत पसंद आई। इससे उसके मन में लालच आ गया। खरगोश आगे चलने लगा तभी बंदर ने खरगोश से कहा, ''खरगोश भाई आगे मेरा भाई लकड़ियाँ काट रहा है, वह तुम्हें मिले तो तुम उसे भी दूध की मलाई खिला देना। खरगोश आगे चल दिया। बंदर बहुत चालाक था वह भी पेड़ की डालियों को पकड़कर खरगोश से आगे निकल गया और रास्ते में आगे जाकर खड़ा हो गया। खरगोश ने उसे भी दूध की मलाई खिला दी। बन्दर ने फिर से वही बात कही कि आगे तुम्हें मेरा भाई मिलेगा तो तुम उसे भी मलाई खिला देना। इस बार खरगोश को कुछ ठीक नहीं लग रहा था वह बात को समझ गया था। इस बार खरगोश ने बंदर के गालों पर दूध की मलाई लगा दी और आगे चल दिया। फिर बंदर वापस पेड़ों के ऊपर चलता हुआ आगे पहुँच गया और खरगोश को मिल गया। खरगोश उसे पहचान गया और बोला कि तुम अब मुझे पागल नहीं बना सकते हो। मुझे सब कुछ पता चल गया है। मैंने तुम्हारे गालों पर मलाई लगा दी थी। वह मलाई अभी तक नहीं सूखी है और अभी भी तुम्हारे गालों पर लगी हुई है। यह सुनकर बंदर को अपने किये पर पछतावा होने लगा। बंदर ने कहा, ''खरगोश भाई मुझे माफ कर दो, मुझे मलाई बहुत ही स्वादिष्ट लगी जिसके कारण मुझे और ज्यादा मलाई खाने का लालच आ गया।

सुरभि, उम्र–11 वर्ष, समूह–खेजड़ी

खाऊँगा क्या

बहुत पुरानी बात है। एक जंगल था। उस जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। उसी जंगल से होकर एक नदी निकलती थी। नदी में जंगल के सारे जानवर नहाते थे। शेर उन सभी जानवरों का राजा था। एक दिन शेर शिकार करने निकल गया। वह दूसरे जंगल में जा पहुँचा और हिरन का शिकार कर लिया। वह शिकार करके वापस लौट आया।

एक दिन एक हिरनी का बच्चा शेर से बोला, ''राजाजी तुम रोज कहाँ जाते हो?''

शेर ने कहा, ''मैं रोज शिकार करने जाता हूँ।''

जीतेन्द्र नायक,
उम्र–12 वर्ष,
समूह–वीर शिवाजी

बच्चा बोला, ''तुम रोज इतनी दूर शिकार करने जाते हो, तुम हमारा ही शिकार क्यों नहीं कर लेते हो?''

सिंह बोला, ''मुझे तुम सब जानवरों पर दया आती है, मैं तुम्हारा राजा हूँ, तुम सब मेरे साथ ही रहते हो, इसलिए मैं तुम्हारा शिकार नहीं करता हूँ।''

बच्चा बोला, ''फिर तुम्हें उन जानवरों पर दया क्यों नहीं आती।''

शेर बोला, ''यदि मैं किसी भी जानवर को नहीं मारूंगा तो खाऊंगा क्या, मैं भूखा मर जाऊंगा। तुम बहुत समझदार हो, तुम मेरे भानजे हो। यदि तुम सब जानवर मेरे लिए शिकार ले आओगे तो मुझे दूसरे जानवरों को नहीं मारना पड़ेगा।''

महेन्द्र नायक, उम्र–11 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी

उपाय करो

नंदनी, उम्र–9 वर्ष, समूह–बरगद

एक बार एक जंगल था। उस जंगल में तोता और कौआ दो दोस्त रहते थे। उस जंगल में एक सांप था जो दूसरे पक्षी एवं जानवरों को खा जाता था। एक दिन एक चिड़िया उड़ती हुई एक पेड़ पर आकर बैठ गई। उस पेड़ पर बहुत मीठे फल आ रहे थे। फलों को देखकर चिड़िया से रहा नहीं गया। उन्हें खाने के लालच में वह उस पेड़ पर आकर बैठ गई। उस पेड़ पर चिड़िया को बैठते हुए सांप ने देख लिया तो वह उस चिड़िया को खाने के लिए पेड़ के पास आ गया और पेड़ पर चढ़ गया। सांप ने पेड़ पर चढ़कर छुपके से चिड़िया की पूँछ पकड़ ली। चिड़िया जोर–जोर से चिल्लाने लगी। उसकी आवाज सुनकर तोता उसके पास आया।

चिड़िया ने तोते से कहा, '' मुझे सांप ने पकड़ लिया है, जल्दी मुझे बचाने के लिए कोई उपाय करो नहीं तो यह मुझे खा जायेगा।''

तोता तुरन्त कौए के पास गया और उसे बुलाकर ले आया। कौए ने जोर से सांप के सिर पर चोंच मारी तो उसने चिड़िया को छोड़ दिया। सांप के सिर से खून निकलने लगा और सांप वहाँ से भाग गया।

कोयल, समूह–सागर, उम्र–8 वर्ष

नींद आ गई

एक समय की बात है। गर्मियों के दिन थे। एक दिन हाथी को बहुत गर्मी लग रही थी। हाथी ने सोचा मैं तालाब की तरफ जाता हूँ। तालाब की तरफ जाते हुए रास्ते में हाथी को एक लोमड़ी मिली। हाथी ने लोमड़ी से तालाब की तरफ जाने का रास्ता पूछा। लोमड़ी हाथी के आगे–आगे चलने लगी और हाथी पीछे–पीछे। हाथी बहुत धीरे चल रहा था और चलते–चलते थक गया तो वह रास्ते में ही रूक गया और एक पेड़ के नीचे ठण्डी जगह पर जाकर बैठ गया। लोमड़ी तालाब के पास पहुँच गई। उसने पीछे मुड़कर देखा लेकिन हाथी दिखाई नहीं दिया। लोमड़ी ने तालाब में पानी पिया और पानी में नहाकर वापस बाहर आ गई और पेड़ पर जाकर बैठ गई। थोड़ी ही देर में उसे नींद आ गई। कुछ देर बाद हाथी आया उसने तालाब में पानी पिया, नहाया और अपनी सूंड में पानी भरकर वापस बाहर आ गया। उसने लोमड़ी को चारों तरफ देखा तो उसे लोमड़ी एक पेड़ पर सोती हुई दिखाई दी। हाथी पेड़ के पास गया और पेड़ को जोर–जोर से हिलाया तो लोमड़ी पेड़ से नीचे गिर गई। हाथी ने उसको पानी से भिगो दिया। लोमड़ी ने कहा, ''तुम कहाँ रह गये थे?'' हाथी ने कहा, ''मैं थक गया था, इसलिए एक पेड़ के नीचे बैठ गया। तुम पेड़ के ऊपर क्यों सो रही थी?'' लोमड़ी ने कहा, ''मैं पेड़ के ऊपर बैठकर तुम्हारा इन्तजार कर रही थी, बहुत देर तक भी तुम नहीं आए तो मुझे नींद आ गई।'' फिर हाथी और लोमड़ी दोनों ही वापस आ गए।

रामकेश बैरवा, उम्र–14 वर्ष, समूह–तिलक

जानवरों की सैर

एक लड़का था। वह निडर था और जानवरों से बहुत प्यार करता था। एक दिन वह जंगल में घूमने जाता है। उसके पीछे एक भूत पड़ जाता है जो लड़के के पीछे–पीछे चलता रहता है। अचानक ही जंगल में तेज बारिश शुरू हो जाती है। पहली बारिश होने के कारण बारिश से मौसम अच्छा हो जाता है। लड़का बहुत खुश होता है और मोर की तरह जंगल में नाचने लगता है। उसे नाचता देखकर जंगल के अन्य जानवर भी वहाँ आ जाते हैं और उसके साथ नाचने लगते हैं। लड़का जानवरों से कहता है कि, ''तुम सब मेरे घर चलो, वहाँ अच्छा भोजन करेंगे और मैं तुम्हें घुमाने ले जाऊँगा।'' सभी जानवर उसके साथ चल देते हैं। भूत भी उनके साथ ही लड़के के घर चला जाता है। सभी जानवर लड़के के घर पहुँच जाते हैं। यहाँ

सब मजे से भर पेट खाना खाते हैं और सो जाते हैं। अगले दिन वे सब दिल्ली घूमने जाते हैं। वहाँ पर इण्डिया गेट व हुँमायुँ का मकबरा देखते हैं। फिर वे एक पार्क में जाते हैं और झूला–चकरी झूलते हैं। लड़का और सभी जानवर बहुत खुश होते हैं। फिर वापस आ जाते हैं और जंगल में चले जाते हैं।

नील, समूह–बरगद, उम्र–9 वर्ष

विजय गुर्जर, उम्र–7 वर्ष, समूह–सागर

एक बार एक गाँव था। उस गाँव में बहुत सारे साँप भी थे। वे साँप बच्चों को खेलते समय डस लेते थे जिससे बहुत से बच्चों की मृत्यु भी हो गई थी। उसी गाँव में एक पेड़ पर एक तोता रहता था। उसने भी कई बार उन साँपों को देखा और इन साँपों से बच्चों को बचाने का उपाय सोचने लगा। उसे याद आया कि साँप मोर से डरते हैं। मोर साँप को अपनी चोंच से मार देते हैं, उन्हें खा भी जाते हैं। तोता जंगल में गया और वहाँ जाकर उसने एक मोर को सारी समस्या के बारे में बताया। मोर उनकी मदद करने के लिए तैयार हो गया। मोर अपने दो–तीन साथियों को लेकर उस तोते के साथ–साथ गाँव में आ गया। तोते ने गाँव में आकर गाँव वालों को बताया कि ये मोर हमारी मदद करेंगे तथा हमें साँपों से छुटकारा मिल सकेगा। वे मोर गाँव में जगह–जगह रहने लगे तथा साँप के दिखते ही उस पर टूट पड़ते और उसे मार भगाते। इस तरह धीरे–धीरे उस गाँव की साँपों की समस्या समाप्त हो गई। गाँव वाले तोता और मोर से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंनें तोते और मोरों को अपने गाँव में ही रख लिया तथा उनके लिए दाना–पानी, चुग्गा आदि डालने लगे।

पवन गुर्जर, उम्र–10 वर्ष, समूह–सागर

लविश, उम्र–6 वर्ष, समूह–मुस्कान

बाघ

एक बार रविवार के दिन हम सब बच्चों को पिकनिक पर ले गये। हम केंटर से रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के जंगल में घूमने गये। हमारे साथ एक गार्ड भी था। हमने जंगल में बहुत से जानवरों को देखा। हमने देखा कि वहाँ एक बाघ के आते ही सभी जानवर–पक्षी चिल्लाने लगे, तरह–तरह की आवाजें निकालने लगे। बाघ एक तालाब के किनारे पानी पी रहा था। उसने वहीं एक हिरणों का झुण्ड देखा। बाघ शिकार के लिए हिरणों के झुण्ड के पास की घास तक गया। तभी पक्षियों और जानवरों ने शोर मचा दिया। हिरण इधर–उधर भागने लगे। फिर भी बाघ ने एक हिरण का शिकार कर लिया। हिरण का शिकार देखकर मुझे अच्छा नहीं लगा। फिर हम पिकनिक से वापस लौट आये और केंटर ने हमें बस स्टेण्ड पर छोड़ दिया। वहाँ एक बस आई जिसमें बैठकर हम घर लौट आए।

रामरूप वैष्णव, दीपक माली, विक्रम, बजरंग, राजकीय विद्यालय कुतलपुरा

लालबाई, उम्र–9 वर्ष, समूह–सागर

बात लै चीत लै

संतान

एक राजा था। उस राजा के पास बहुत सारा धन था परन्तु उसके कोई संतान नहीं थी। उसका मंत्री बहुत ही समझदार और सच्चा था। एक दिन मंत्री की पत्नी ने लड़के को जन्म दिया। राजा भी मंत्री के बच्चे को देखने के लिए उसके घर गया। राजा लड़के को देखकर बहुत खुश फिर दुःखी हुआ। क्योंकि उसके संतान नहीं थी। उसे इसकी चिंता हमेशा सताती रहती थी। उसने बच्चे को गोद में लेकर खिलाया। तभी वहाँ से एक साधु गुजरा तो उसने राजा को देखकर कहा, ''हे राजा, तुम्हें देखकर मुझे ऐसा लग रहा है कि तुम्हारी अपनी कोई संतान नहीं है।''

राजा ने कहा, ''तुम्हें कैसे पता कि मेरे कोई संतान नहीं है।''

साधु ने कहा, ''हम अपनी शक्ति से सब जान जाते हैं।''

राजा ने कहा, ''हे साधू, कृपया कोई सुझाव या इसका समाधान बताइये।''

साधु ने कहा, ''राजा, तुम्हारे भाग्य में लिखा है कि तुम्हारे अभी कोई संतान नहीं हो सकती, हाँ तुम किसी दूसरे के बच्चे को गोद ले लो या दूसरी शादी कर लो।''

राजा वहाँ से अपने घर को चला गया और सारे दिन यहीं सोचता रहा कि मैं दूसरी शादी नहीं करूंगा क्योंकि मुझे अपनी पत्नी को छोड़ना पड़ेगा। मैं किसी का बच्चा ही गोद ले लेता हूँ। दूसरे दिन वह अपने मंत्री के पास गया और उससे कहा, ''क्या तुम मुझे तुम्हारा बच्चा गोद दे सकते हो?'' मंत्री कुछ नहीं बोला और अन्दर अपनी पत्नी के पास चला गया। उसने अपनी पत्नी को सारी बात बताई तो पत्नी बोली, ''आप उन्हें समझाओं की हमारे बेटे को गोद ना ले। वे दूसरी शादी करके अपनी पत्नी को नहीं छोड़ सकते और हम अपने कलेजे के टुकड़े को छोड़ दें।'' दूसरे दिन मंत्री राजा के पास गया और उसकी पत्नी ने उसे जो बताया उसने राजा से कहा। राजा को बहुत दुःख हुआ। उसने कहा, ''मैं संतान के लालच एवं साधु के बहकावे में आ गया था। अब मैं कभी किसी के बहकावे में नहीं आऊँगा।''

आरती मीना, समूह–उजाला, उम्र–12 वर्ष

छुर्रा जब रास्ता भूला

बहुत पहले की बात है। उस समस मिजोरम के ज्यादातर लोगों का जीवन शिकार या खेती बाड़ी पर निर्भर था। छुर्रा और उसका परिवार भी खेती बाड़ी पर ही अपना गुजारा करता था। एक समय छुर्रा और उसका परिवार बहुत गरीबी की हालत से गुजर रहा था। घर पर अनाज बिलकुल खत्म होने को था और अगली फसल को तैयार होने में भी अभी वक्त था। सवाल यह था कि ऐसी स्थिति में क्या किया जाए। छुर्रा की पत्नी को खयाल आया कि उनके पास एक बहुत बड़ा घड़ा है जो काफी कीमती है। उस घड़े पर उन्हें काफी नाज भी था। पर लगा कि उनके पास केवल वो ही ऐसी चीज है जिसे बेचकर वह अगली फसल तैयार होने तक चावल खरीद सकते हैं।

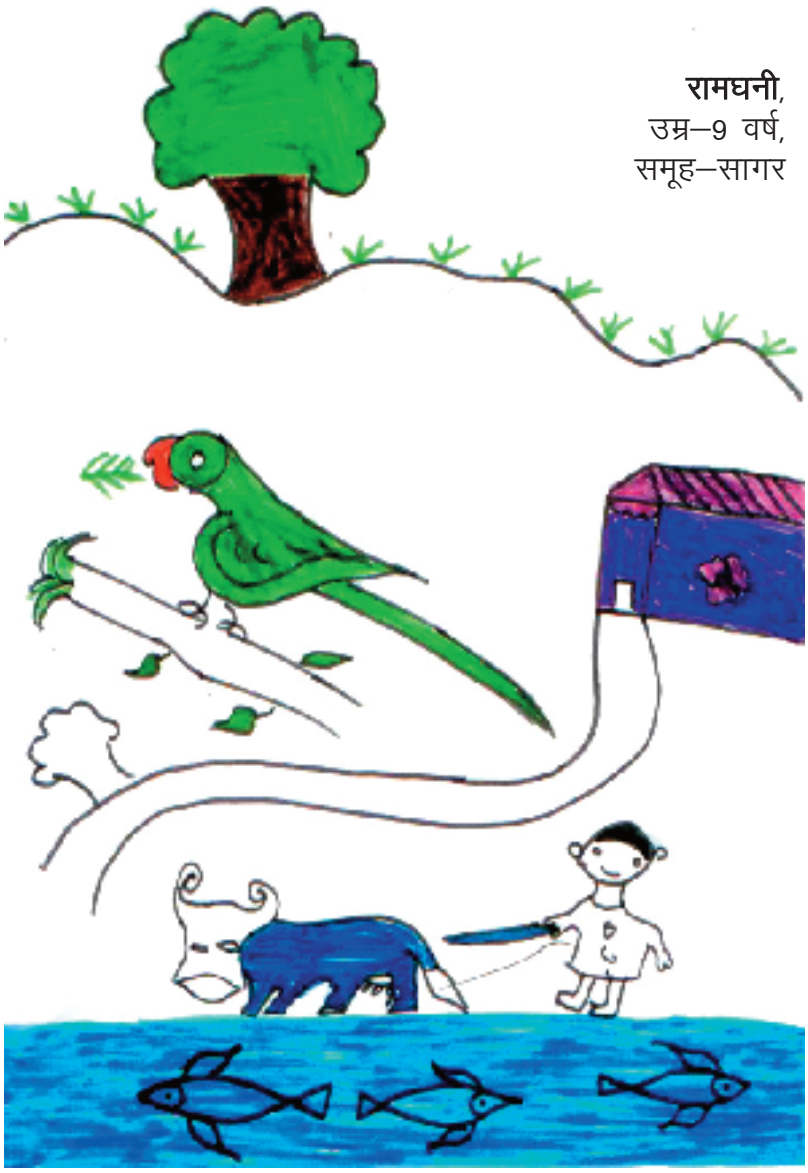

रामघनी,
उम्र–9 वर्ष,
समूह–सागर

आखिर यह निर्णय हुआ कि अगले दिन सुबह छुर्रा किसी दूसरे गांव में उस घड़े को बेच आएगा। जिस गांव में छुर्रा को जाना था। वह उनके अपने गांव से काफी दूरी पर था। छुर्रा की बीवी ने उसके जाने से पहले समझाया कि वह भूलकर भी उस घड़े को रास्ते में अपने कंधे से ना उतारे। उसे डर था कि कहीं ऐसा करते समय वो घड़ा टूट ना जाए। क्योंकि छुर्रा बहुत भोला था। उसकी पत्नी ने छुर्रा से कहा यदि उसका दांया कंधा थक जाये तो घड़ा बांये कंधे पर रख ले पर उसे जमीन पर ना उतारे।

लगभग आधा रास्ता तय करने के बाद छुर्रा का कंधा थक गया। छुर्रा को लगा कि यदि वह घड़े को दूसरे कंधे पर ले जाने की कोशिश करेगा तो हो सकता है कि ऐसा करते करते घड़ा ही गिर कर टूट जाए।

अब था तो छुर्रा कम बुद्धि वाला। उसने सोचा कि घड़े को एक कंधे से दूसरे कंधे तक ले जाने के बजाये खुद ही घूम जाए तो अपने आप उसका कंधा बांई तरफ का हो जायेगा। बस फिर क्या था छुर्रा उल्टी दिशा में चलने लगा यह समझे बगैर कि वह फिर वापस अपने गांव की ही दिशा की ओर जा रहा है। उस समय काफी अंधेरा हो चुका था। वह वापस अपने गांव पहुंच गया था पर उसे लगा कि वह दूसरे गांव में आ गया है। वह अपने ही पड़ोस में आ पहुंचा जहां उसके बच्चे खेल रहे थे। जब बच्चों ने अपने पिता को देखा तो वह बहुत खुश हुए और चिल्लाने लगे, ''पिता जी आ गए! पिता जी आ गए!''

बच्चे अपने बाप को देखकर प्यार से उसके पास आ बैठे। उन्हे देखकर छुर्रा बहुत खुश हुआ। छुर्रा ने सोचा कि इस गांव के बच्चे तो एकदम उसके अपने बच्चों जैसे ही हैं, हालांकि वह उनके लिए अजनबी है। छुर्रा मन ही मन सोचने लगा कि यह गांव तो सच में बहुत अच्छा है जहां पराये बच्चे भी अनजान आदमी को पिता कहकर पुकार रहे हैं। उस समय छुर्रा के बच्चे पड़ोसियों के घर आये हुए थे। वह तुरंत अपने घर गये और अपनी मां को पिता के वापस पहुंचने की खबर दी। मां ने कहा कि वह अपने पिता को घर आने को कहें।

जब वह नहीं आया तो वह स्वयं उसे बुलाने जा पहुंची और आते ही पूछा कि वह घड़ा बेचकर क्यों नहीं आया और डांटने लगी। छुर्रा ने सोचा कि यह औरत भी एकदम उसकी बीवी की तरह झगड़ालू है। छुर्रा समझ ही नहीं पा रहा था कि गांव में वापस आ चुका है और उसकी अपनी पत्नी ही उसे बुलाने आई है।

वह बोला '' मैं आपके घर क्यों आऊं? मेरे घर मेरी अपनी पत्नी है, बच्चे हैं और मैं वापस केवल अपने घर ही जाऊंगा।''

छुर्रा की बीवी को समझ नहीं आ रहा था कि वह अपने पति की बातों पर हंसे या रोये।

उसने सोचा, जो भी हो इसमें कोई शक नहीं कि वह दिल का बहुत अच्छा और नेक इंसान है।

यह ख्याल आते ही छुर्रा की बीवी ने अच्छे से उसे समझाया कि वह दर–असल अपने ही घर लौट आया है। यह सुनकर छुर्रा अपनी नासमझी पर खूब हंसा और साथ ही साथ उसकी बीवी और बच्चे भी।

स्रोत– मिजोरम की लोक कथाएं

मटरगश्ती बड़ी सस्ती

भाषा की सहेलियाँ
बूझो यार पहेलियाँ

शिवानी,
उम्र–12 वर्ष,
समूह–शीशम

1. बूझो बच्चो एक पहेली, यह है हम सब की सहेली, व्याकरण में पहले आती, सबका नाम ये कहलाती।
2. संज्ञा बार–बार जब आए, वाक्यों को नीरस बनाए, उसे हटा वाक्य में आता, बोलो बच्चों क्या कहलाता।
3. काम करो भई काम करो, देती हूँ मैं पैगाम, सबकी हलचल देखूँ मैं, बोलो–बोलो मेरा नाम।
4. सीधा अर्थ न मुझको आता, उल्टा काम ही मुझको भाता, उल्टा करना मेरा काम, देखो तो अब मेरा नाम।
5. ये है लाल वो है काला, ये है मीठा वो रसवाला, भाँति–भाँति के गुण बतलाता, बोलो बच्चों क्या कहलाता।
6. चाँद एक तारे अनेक, फूल एक भँवरे अनेक, एक अनेक का का ज्ञान कराऊँ, बोलो मैं क्या कहलाऊँ।

दीपक बैरवा, उम्र–12 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार–फरिया।

हीहीही-ठीठीठी

1. चिंटू ने मेडिकल स्टोर से दवा ली और स्टोर वाले से कहा – ''चीनी भी दो।''

मेडिकल स्टोर वाला – ''चीनी यहाँ नहीं मिलती है।''

चिंटू – ''हम पागल नहीं हैं, पढ़े–लिखे हैं। दवा पर लिखा है शुगर फ्री।''

2. चिंकी– ''जब मैं छोटी थी तो छत से गिर गई थी।''

चिंकू – ''फिर तू बच गई थी या मर गई थी।''

चिंकी – ''अब मुझे क्या पता, मैं तो छोटी थी ना।''

3. एक चोर चोरी करके घर से निकल रहा था तभी बच्चे की आँख खुल गई और बच्चा चोर से बोला –''मेरा स्कूल बैग भी ले जा वरना शोर मचा दूंगा।''

शैलेन्द्र सिंह राजावत, शिक्षक, उदय पाठशाला गिरिराजपुरा।

मनीषा, कक्षा–7,
राजकीय विद्यालय, रामपुरा

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ

बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

एक सियार था। उसका नाम गोलू था। वह जंगल का राजा बनना चाहता था। उसके एक पत्नी थी। एक दिन उसकी पत्नी ने बच्चे दिये। बच्चे बहुत प्यारे थे। सियार ने सोचा कि जंगल का राजा तो इन्हें ही बनाना पड़ेगा।...

बुद्धि प्रकाश गुर्जर, *समूह–सागर, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

जंगल में से आती चिडिया।
मुँह में दाना लाती चिड़िया...

मनखुश, *उम्र–9 वर्ष, समूह–सागर, द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके भेजो।*

पहेलियों के ज़वाब –

1. संज्ञा 2. सर्वनाम 3. क्रिया 4. विलोम 5. विशेषण 6. वचन

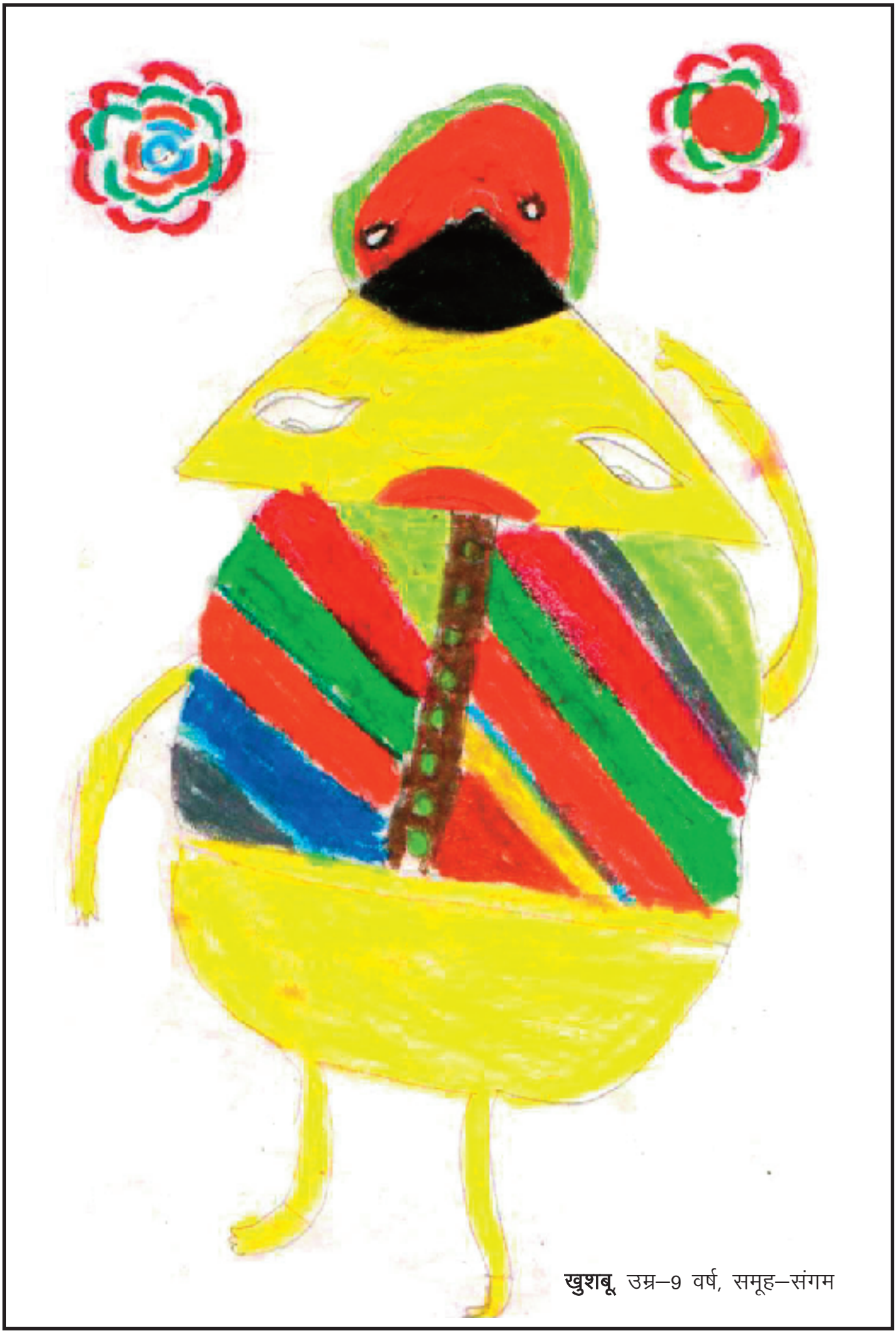

खुशबू, उम्र–9 वर्ष, समूह–संगम